संत कबीर

कबीर, सन्त, कवि और समाज सुधारक थे।

ये सिकन्दर लोदी के समकालीन थे।

कबीर का अर्थ अरबी भाषा में महान होता है। कबीरदास भारत के भक्ति काव्य परंपरा के महानतम कवियों में से एक थे।

जीवन

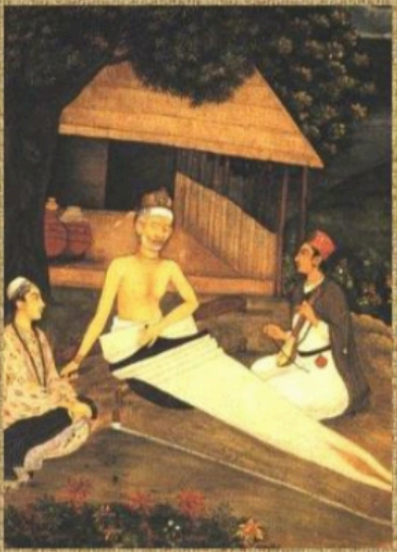

काशी के इस अक्खड़, निडर एवं संत कवि का जन्म लहरतारा के पास सन् 1455 में ज्येष्ठ पूर्णिमा को हुआ। जुलाहा परिवार में पालन पोषण हुआ, संत रामानंद के शिष्य बने ।

कबीर सधुक्कड़ी भाषा में किसी भी सम्प्रदाय और रूढ़ियों की परवाह किये बिना खरी बात कहते थे। हिंदू-मुसलमान सभी समाज में व्याप्त रूढ़िवाद तथा कट्टरपंथ का खुलकर विरोध किया।

धर्म के प्रति

साधु संतों का तो घर में जमावड़ा रहता ही था। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे।'उन्होंने स्वयं ग्रंथ नहीं लिखे, मुँह से भाखे और उनके शिष्यों ने उसे लिख लिया।

अवतार, मूर्त्ति, रोज़ा, ईद, मसजिद, मंदिर आदि को वे नहीं मानते थे।

वाणी संग्रह

कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है।

इसके तीन भाग हैं- रमैनी, सबद और साखी

यह पंजाबी, राजस्थानी, खड़ी बोली, अवधी, पूरबी, ब्रजभाषा आदि कई भाषाओं की खिचड़ी है।

कबीर परमात्मा को मित्र, माता, पिता और पति के रूप में देखते हैं।यही तो मनुष्य के सर्वाधिक निकट रहते हैं।

गुरु ग्रंथ साहब में उनके २०० पद और २५० साखियां हैं।

काशी में प्रचलित मान्यता है कि जो यहाँ मरता है उसे मोक्ष प्राप्त होता है। रूढ़ि के विरोधी कबीर को यह कैसे मान्य होता। काशी छोड़ मगहर चले गये और सन् 1575 के आस पास वहीं देह त्याग किया।

मगहर में कबीर की समाधि है जिसे हिन्दू मुसलमान दोनों पूजते हैं।

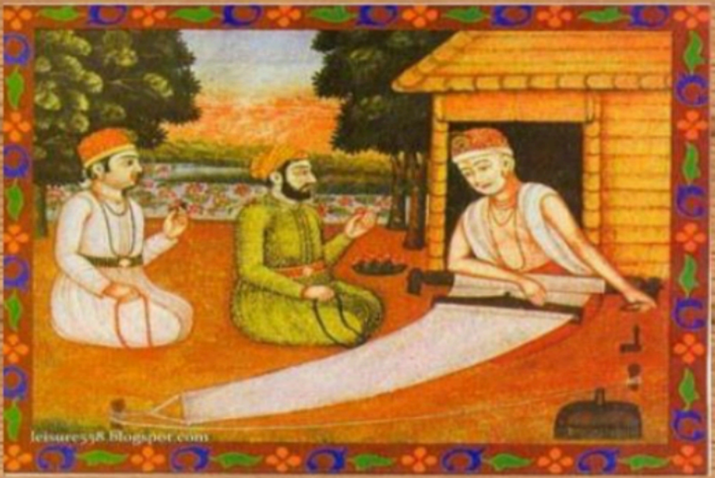

कबीर की रचनाओं के संदर्भों पर आधारित
ऋतु चोपड़ा की पेंटिंग्स अभिव्यक्ति

बुरा जो देखण मैं चला बुरा न मिलया कोए
जो मन खोजा आपणा तो मुझसे बुरा न कोए

Title-
Self Realization